लोकों में विराजमान रहते हैं और वैकुण्ठ लोकों में प्रविष्ट होने वाले भक्तों के साथ लीला करते हैं। अतएव जीवन के अन्त में योगी यथायोग्य ब्रह्मज्योति, परमात्मा अथवा भगवान् श्रीकृष्ण का चिन्तन करते हैं। परव्योम में तो उन सभी का प्रवेश हो जाता है, पर वैकुण्ठ लोकों में केवल भगवद्भक्त ही प्रविष्ट हो पाते हैं। श्रीभगवान् आगे कहते हैं कि 'इसमें सन्देह नहीं है।' श्रीभगवान् की इस घोषणा में दृढ़ विश्वास करना है। जो हमारी कल्पना के अनूकूल न हो, उस सत्य को अस्वीकार कर देना युक्तिसंगत नहीं होगा। हमारा मनोभाव अर्जुन का सा होना चाहिएः 'आप जो कुछ भी कहते हैं, वह सब सत्य है, मुझे स्वीकार है।' अतः भगवान् का यह कथन निस्सन्देह सत्य है कि मृत्युकाल में जो कोई भी उनका ब्रह्म, परमात्मा अथवा भगवान् के रूप में चिन्तन करता है, वह अवश्य परव्योम में प्रविष्ट हो जाता है। इसमें अविश्वास का तो प्रश्न ही नहीं बनता।

अन्तकाल में भगवच्चिन्तन करने के प्रकार का भी गीता में उल्लेख हैः

यं यं वापि स्मरन् भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।।

'जिस-जिस भी भाव का स्मरण करते हुए यह जीव देह को त्यागता है, उस उसको ही प्राप्त होता है।' (८.६)

माया (अपरा प्रकृति) परमेश्वर की एक शक्ति का प्रकाश है। 'विष्णु पुराण' में श्रीभगवान् की सम्पूर्ण शक्तियों का वर्णन है: **विष्णुशक्तिः परा प्रोक्ता . . .।** परमेश्वर नाना प्रकार की असंख्य शक्तियों से युक्त हैं, जो हमारे लिए सर्वथा अचिन्त्य हैं। किन्तु तत्त्ववेत्ता ऋषियों ने इन शक्तियों का अध्ययन करके तीन भागों में वर्गीकरण किया है। ये सभी विष्णुशक्ति कहलाती हैं। इनमें एक परा नामक दिव्य शक्ति है। जैसा वर्णन किया जा चुका है, जीव इसी परा शक्ति के अंश हैं। अन्य सभी शक्तियाँ प्राकृत होने से तमोगुणमयी हैं। मृत्यु-काल में हम स्वेच्छानुसार इस संसार की अपरा शक्ति (माया) में बने रह सकते हैं अथवा वैकुण्ठ-जगत् की दिव्य शक्ति में स्थानान्तरित भी हो सकते हैं।

इस जीवन में हम परा-अपरा शक्तियों में से किसी एक का चिन्तन करने के अभ्यस्त हैं। समाचार पत्र, उपन्यास आदि नाना प्रकार का साहित्य हमारे चित्त को अपरा शक्ति (माया) के चिन्तन से भर देता है। इस कोटि के निकृष्ट साहित्य में तल्लीन हो रही अपनी चिन्तनशक्ति को हमें वैदिक साहित्य में लगाना है। महर्षियों ने पुराण आदि वैदिक साहित्य का प्रणयन इसी प्रयोजन से किया है। पुराण काल्पनिक नहीं हैं, वरन् ऐतिहासिक संकलन हैं। 'श्रीचैतन्य चरितामृत' (मध्यलीला २०।१२२) में कहा है—

माया मुग्ध जीवेर नाहि स्वतः कृष्णज्ञान।
जीवेर कृपाय कैला कृष्ण वेद-पुराण।।

विस्मरणशील जीव परमेश्वर श्रीकृष्ण से अपने नित्य सम्बन्ध को भुलाकर विषयपरायण हो रहे हैं। उनकी चिन्तनशक्ति को भगवद्धाम में केन्द्रित करने के